(i) **Printed Pages : 3** **Roll No. .....**

(ii) **Questions : 8** **Sub. Code :** 0 0 1 1

Exam. Code : 0 0 0 1

B.A./B.Sc. (General) 1st Semester
1128
SANSKRIT (Elective)
Paper : Katha, Niti Evem Vyakaran

Time Allowed : Three Hours] **[Maximum Marks : 90**

नोट :— सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक का सप्रसंग सहित अनुवाद करें :—

(क) ततो नापितोऽपि स्वगृहं गतः तत्र च गत्वा खादिरमयं लगुडं सञ्जीकृत्य कपाट युगलं द्वारि समाधाय सार्धप्रहरैकसमये भुयोऽपि विहारद्वारमाश्रित्य सर्वान्क्रमेण निष्क्रामतो गुरु प्रार्थनया स्वगृहमानयत्। तेऽपि सर्वे कर्पटवित्तलोभेन भक्तियुक्तानपि परिचित् श्रावकान् परित्यज्य प्रहृष्टमनास्तस्य, पृष्ठतो ययुः।

(ख) कस्मिश्चिदधिष्ठाने देवशर्मा नाम ब्राह्मणः प्रतिवसति स्म। तस्य भार्या प्रसूता सुतमजनयत्। तस्मिन्नेव दिने नकुली नकुलं प्रसूय मृता! अथ सा सुतवत्सला दारकवत्तामपि नकुलं स्तन्यदानाऽभ्यङ्गमर्दनादिभिः पुपोष। परं तस्य न विश्वसिति। अपत्यस्नेहस्य सर्वस्नेहातिरिक्ततया सततमेवभाशङ्कते यत्-कदाचिदेष स्वजातिदोष वशादस्य दारकस्य विरुद्धमाचिरिष्यति।

(ग) तथाऽनुष्ठिते तैर्भागांश्रितैरटव्यां कतिचिदस्थीनि दृष्टानि। ततश्चैकेनाऽभिहितम्, अहो अद्य विद्याप्रत्ययः क्रियते। किञ्चिदेतत्सत्त्वं मृतं तिष्ठति। तद् विद्या-प्रभावेन जीवन सहित कुर्मः। अहमस्थिसञ्चयं करोमि, ततश्च तेनौत्सुक्यादस्थि सञ्चयः कृतः। द्वितीयेन चर्ममास रुधिरं संयोजितम्। तृतीयोऽपि यावज्जीवनं सञ्चारयति, तावत्सुबुद्धिना निषिद्धः "भो तिष्ठतुभवान्। एष सिंहः निष्पाद्यते। यद्येनं सजीवं करिष्यसि ततः सर्वानपि व्यापादयिष्यति।" 5

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** भागों की सप्रसंग व्याख्या करें :–

(क) तृष्णैका तरुणायते।

(ख) यस्य यदा विभवः स्यात्तस्य तदा दासतां यान्ति।

(ग) प्रतिदिवसं याति लयं वसन्तवाताहतेव शिशिरश्रीः।
बुद्धिर्बुद्धिमतामपि कुटुंबभरचिन्तया सततम्।

(घ) सौहृदयं न वाञ्छन्ति जनकस्य हितस्य च।
लोकाः प्रपालकस्याऽपि, यथा पुत्रस्य बन्धनम्। 10

3. 'ब्राह्मणी-नकुल कथा' अथवा लोभाविष्ट-चक्रधर-कथा का सार लिखें। 5

4. (क) किन्हीं **दो** श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या करें :–

(i) वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजन सम्पर्कः सुरेन्द्र भवनेष्वपि।।

(ii) जाड्यं धियो हरति, सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयतिं दिक्षुं तनोति कीर्तिं।
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।

(iii) अज्ञः सुखभाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति।

(iv) साहित्यसंगीत कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छ विषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागदेयं परमं पशूनाम्। 10

(ख) किसी **एक** सूक्ति की सप्रसंग व्याख्या करें :–

(i) वाग्भूषणं भूषणम्।

(ii) विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।

(iii) मूर्खस्य वास्त्यौषधम्।। 5

5. किन्हीं **दस** शब्दों को संस्कृत में लिखें :–
अंगूठा, गर्दन, भौं, काजू, जामुन, खजूर, शरीर, पेट, कमर, बैंगन, प्याज, मिर्च, लीची, सेव, आलू। 10

6. (क) किन्हीं **चार** वर्णों का उच्चारण स्थान लिखें :–
य्, ध्, न्, घ्, क्, च्, थ्, भ्। 4

(ख) किन्हीं **पांच** अव्ययों को वाक्य में प्रयोग करें :–
कदा, यदा, तदा, सदा, अन्यत्र, कुत्र, तत्र, यत्र, तथा सर्वत्र। 5

(ग) किन्हीं **पांच** गणनावाची अंकों को संस्कृत में लिखें :–
6, 21, 40, 45, 25, 18, 36, 33, 16, 19। 5

7. (क) भारतीय पंचाग के अनुसार **वार** अथवा **नक्षत्रों** के नाम लिखें। 5

(ख) किन्हीं **पांच** की सन्धि/सन्धिविच्छेद करें :–
विद्या+आलयः, हित+उपदेशः, सूर+इन्द्रः, जल+ओघः,
नै+अकः, तथैव, अन्वयः, न्यूनः, मुनये, प्रौढः। 5

(ग) किन्हीं **दो** शब्दों के सभी विभक्तियों में रूप लिखें :–
राम, फल, नदी। 2×4=8

(घ) किन्हीं **दो** धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखें :–
√पा-लट्लकार, √गम्-लृट्लकार, √क्रीङ्-लोट्लकार
√पठ्-लङ्लकार 2×4=8

8. किन्हीं **पांच** का संस्कृत में अनुवाद करें :–

(i) वह देखता है।

(ii) राम पुस्तक पढ़ता है।

(iii) बालक गुरु को प्रणाम करता है।

(iv) वह पैरों से चलता है।

(v) तुम अपने घर जाते हो।

(vi) पक्षी प्रातः चहचहाते हैं।

(vii) भगवान् शंकर को नमस्कार है।

(viii) किसी की निन्दा न करो।

(ix) मैं प्रातः चार बजे उठता हूँ।

(x) पापी को धिक्कार है। 5